डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

आदिवासी और वाचिक समृद्ध साहित्य के प्रलेखन और संरक्षण के और किए जाने चाहिए प्रयास – भगवान दास पटेल

मिथकों में सृष्टि और जीवन के रहस्य सुरक्षित हैं – वसंत निरगुणे

नई दिल्ली। 23 मार्च 2018। आदिवासी एवं वाचिक साहित्य : वर्तमान परिदृश्य विषयक संगोष्ठी के दूसरे दिन के पहले सत्र का विषय था 'भूमंडलीकरण और आदिवासी साहित्य'। इसकी अध्यक्षता गारो की प्रतिष्ठित लेखिका कैरोलिन आर. मरक ने की तथा आलेख पाठ किया सुकसिंग लेप्चा, शांथा नाईक तथा सूरज बड़त्या ने। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रतिष्ठित लेखिका कैरोलिन आर. मरक ने पूर्वोत्तर भारत की आदिवासी भाषाओं के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए बताया कि खासी और जयंतिया को छोड़कर वहाँ की सभी आदिवासी भाषाएँ बाङ्ला भाषा से संबंध रखती हैं। उन्होंने ब्रिटिश शासन के समय और भूमंडलीकरण के मौजूदा दौर में पूर्वोत्तर भारत के आदिवासियों की संस्कृति, उनके जन–जीवन, उनके लोकगीत, कविता, नाटक की तुलना करते हुए आज के समय में लोक साहित्य में आए परिवर्तनों को भी रेखांकित किया। उन्होंने यह भी कहा कि आज आदिवासी साहित्य लुप्त होता जा रहा है, किंतु उसे पुनः सुरक्षित एवं संरक्षित किए जाने का प्रयास भी किए जा रहे हैं। इस सत्र में सुकसिंग लेप्चा ने बताया कि लेप्चा जनजातियों में पौराणिक काल से ही मौखिक कहानी सुनाने की परंपरा चली आ रही है। उन्होंने लेप्चा भाषा में अनूदित पुस्तकों तथा बाङ्ला से लेप्चा में अनूदित पुस्तकों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने यह भी कहा कि लेप्चा भाषा में गाए जाने वाले गीत लुप्त होते जा रहे हैं, लेकिन आज की युवा पीढ़ी इसे संरक्षित करने का कोई प्रयास नहीं कर रही है।
इस सत्र में चर्चित बंजारा लेखक शांथा नाईक ने 'बंजारा संस्कृति, परंपरा और उनके जनजीवन पर भूमंडलीकरण' के प्रभावों के बारे में अपने सुचिंतित आलेख में विस्तार से चर्चा की। इस सत्र के अंत में हिंदी के प्रतिष्ठित लेखक सूरज बड़त्या ने भी बंजारा समुदाय के जन–जीवन और संस्कृति के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि बंजारा समुदाय देश के विभिन्न क्षेत्रों में रह रहा है। वह अपने समाज के दायरे में अपने साहित्य और संस्कृति को संभाले हुए है। लेकिन देश के विभिन्न क्षेत्रों में उसे अलग–अलग श्रेणियों में अनुसूचित किया गया है, जिसके कारण वह स्वयं अंतर्द्वंद्व के संकटों से गुजर रहा है। यह चिंता का विषय है।

अगले सत्र का विषय था 'वाचिक साहित्य : मिथकों की सृजन परंपरा'। इस सत्र की अध्यक्षता जनजाति और लोक संस्कृति तथा साहित्य और कला के अध्येता तथा चिंतक वसंत निरगुणे ने की तथा आलेख प्रस्तुत किये– सोमदत्ता मंडल, रमोना एम. संगमा तथा जयमती कश्यप ने। सोमदत्ता मंडल ने कहा कि किसी भी मौखिक साहित्य का मूल तत्त्व शब्द, उसकी बनावट, उसकी संरचना तथा उसके अर्थ में होता है। उन्होंने बताया कि रामकथा का वर्मा, इंडोनेशिया, कंबोडिया, नेपाल, थाइलैंड, मंगोलिया, श्रीलंका, चीन आदि देशों में अलग–अलग रूप देखने को मिलता है। 14वीं तथा 16वीं शताब्दी के रामायण में शास्त्रीय एवं लोक परंपरा दिखाई देती है। प्रत्येक समाज, क्षेत्र एवं देश की अपनी अलग संस्कृति होती है और वे उसे अपनी संस्कृति से जोड़कर अलग–अलग रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने रामायण के बुद्धिस्ट संस्करण तथा अमेरिकी संस्करण के बारे में बताते हुए कहा कि विश्व के कोने–कोने में रामायण का मिथक है – राम और सीता की कहानी को सभी देश अपनी कथा के रूप में स्वीकारते हैं। रमोना

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

एम. संगमा ने बताया कि मेघालय के बालपकराम, चिड़ियाक आदि स्थानों में विभिन्न तरह के मिथक प्रचलित हैं, उनके बारे में चित्र के माध्यम से विस्तार से चर्चा की और यह भी कहा कि प्रत्येक मिथक का अपना एक पूर्व इतिहास होता है। गोंडी की चर्चित लेखिका जयमती कश्यप ने बस्तर क्षेत्र के मिथक के बारे में कई लोक कथाओं के माध्यम से बताते हुए कहा कि कैसे ये मिथक अकाल या प्रलय के सूचक समझे जाते हैं। वसंत निरगुणे ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में मिथक को आदि मानव की रहस्यमयी भाषा माना जिसके माध्यम से आदिमानव प्रकृति और जीवन के गूढ़ रहस्यों को जानने, उन्हें खोलने की चेष्टा जीवन की शुरुआत से करता आया है। उन्होंने यह भी कहा कि आदिम पुराकथा या मिथक जीवन यथार्थ के सामूहिक अवचेतन मन के अंदर के सूक्ष्म तलों की सच्ची गहराइयों को जानने, समझने के सारभूत, सहज स्फूर्त प्रतीकात्मक उपकरण भी हैं। उन्होंने अलग–अलग जनजातियों के मिथकों की विस्तारपूर्वक चर्चा की।

कार्यक्रम का अंतिम सत्र ''वाचिक साहित्य : प्रलेखन एवं संरक्षण के प्रयास' विषय पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता भील आदिवासी लोक साहित्य के विशेषज्ञ भगवान दास पटेल ने की। उन्होंने आदिवासी लेखन के संरक्षण पर विशेष जोर देते हुए कहा कि प्रलेखन और संरक्षण के लिए आदिवासियों की समृद्ध परंपरा, उनके रीति रिवाजों, संस्कृतियों तथा उनके कथा–पात्रों के साथ उनके निजी संबंधों को गहराई से समझकर ही उनका प्रलेखन एवं संरक्षण किया जा सकता है। अपने आलेख में नीतिशा खलखो ने वाचिक साहित्य के प्रलेखन और संरक्षण के लिए किए गए और किए जा रहे विभिन्न कार्यों को विस्तार से बताया। उन्होंने संताल लोक गीतों के माध्यम से बताया कि आदिवासियों में शिक्षा, स्वास्थ्य, संबंध और सहजीवन की चेतना मौजूद है। उन्होंने कहा कि वाचिक साहित्य हमारे देश के विभिन्न अंचलों में बिखरा पड़ा है और इस समृद्ध विरासत को सहेजने की बहुत आवश्यकता है। इस दिशा में साहित्य अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों के लिए उन्होंने साधुवाद भी दिया।

इस दो दिनों की संगोष्ठी में साहित्य प्रेमी बड़ी संख्या में मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

के. श्रीनिवासराव
सचिव, साहित्य अकादेमी